निम्न प्रथम प्रकार वर्गीकरण किये गये हैं।

Notes

संवेदन गति सीखना (sensory Motor learning)
गामक सीखना (Motor learning)
बौद्धिक सीखना (Intellectual learning)

संवेदनगति सीखना → संवेदन गति सीखने की प्रक्रिया में कौशल अर्जन सम्बन्धी ज्ञान आता है। इसमें व्यक्ति द्वारा विभिन्न प्रकार की कुशलताए अर्जित किया जाता है
जैसे- तैरना, पेड़ पर चढ़ना, बाइक चलाना, टाइपिंग करना चित्र बनाना आदि

गामक सीखना

इस प्रकार सीखने की प्रक्रिया में व्यक्ति विकास की प्रारम्भिक अवस्था शरीर में संचालन एवं गति पर नियन्त्रण करना सीखता है।

बौद्धिक सीखना

इसके अन्तर्गत ज्ञानोपार्जन सम्बन्धी समस्त क्रियाए आती हैं। ये निम्नवत हैं।

1- प्रत्यक्षीकरण
2. सम्प्रत्ययात्मक सीखना
3. साहचर्यात्मक सीखना
4- रसानुभूतिपरक सीखना

प्रत्यक्षीकरण - इस प्रकार के सीखने में व्यक्ति इन्द्रियो की सहायता से पदार्थ और बाह्य घटनाओं या तथ्यों को जानने की क्रिया करता है यह एक मानसिक क्रिया है इनमें निम्न क्रियाए सम्मलित हैं, जैसे किसी उत्तेजक का उपस्थित होना, उत्तेजक के ज्ञानेन्द्रियों को प्रभावित करना उत्तेजक अनुभव को मस्तिष्क में स्थित बोध केन्द्र तक पहुँचाना संवेदन का अर्थ जुड़कर प्रत्यक्षीकरण होना

Scanned by CamScanner

सम्प्रत्यात्मक सीखना :- इस प्रकार के सीखने में व्यक्ति को तर्क, कल्पना, और चिन्तन का सहारा लेना पड़ता है। सम्प्रत्यय निर्माण प्रत्यक्षीकरण के बाद विभिन्न वस्तुओं का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कर व्यक्ति उनके गुणों का विश्लेषण करता है। और उनमें तुलना करता है। इस प्रकार की वस्तुओं की जानकारी प्राप्त कर लेता है। और उसके गुणों से पर्सनिस परिचित हो जाता है।

(iii) साहचर्यात्मक सीखना :- इस प्रकार के सीखने में स्मृति का महत्वपूर्ण स्थान होता है। जब दो या दो से अधिक वस्तुएँ व्यक्तियों या तथ्यों में पूर्ण अथवा आंशिक रूप से समानता होती है या असमानता होती है। तो एक वस्तु व्यक्ति अथवा तथ्य के स्मरण से ~~पूर्ण अथवा आंशिक रूप से~~ दूसरे का स्मरण स्वयं हो जाता है।

(iv) रसानुभूतिपरक सीखना :- इस प्रकार के सीखने में बालक और व्यक्ति संवेगात्मक अनुभूति से सीखते हैं। भावात्मक वर्णन या परिदृश्य से अभिभूत होकर वह सम्बन्धी गुणों को सीखता है।

1- सरल अधिगम या सीखना
2. काढेन सीखना
3. आकस्मिक सीखना
4. उद्देश्य पूर्ण सीखना।

Scanned by CamScanner

Notes

अधिगम के उद्देश्य व महत्व
(Aims and Importance of Learning)

1- व्यवहार में परिवर्तन सीखना व्यवहार में ~~लाने~~ की परिवर्तन लाने की प्रक्रिया जो व्यक्ति कुछ भी सीखता है। उसके बाद उसके व्यवहार में परिवर्तन होता है, इसके द्वारा व्यक्ति में वांछित व्यवहार परिवर्तन भी किया जाता है। सीखने की प्रक्रिया में व्यक्ति के व्यवहार में उसके तीनों ही पक्षों - ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक में परिवर्तन लाया जा सकता है।

2. शिक्षण - अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति :- सीखने की प्रक्रिया में बालक के लिए निर्धारित शिक्षण अधिगम के उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है। इस परिवर्तन प्रक्रिया में बालक की शिक्षण अधिगम परिस्थितियों में परिवर्तन लाया जा सकता है। इन परिवर्तनों में बालक नये ज्ञान, कौशल, अनुप्रयोग, अभिवृत्ति एवं अभिरुचियों को सीखता है।

ज्ञान, कौशल, आदत, अभिवृत्ति व मूल्यों का अधि
(LEARNING AND KNOWLEDGE, SKILL, HABIT, ATTITUDE AND VALUES)

बाल के व्यवहार मे किस तरह परिवर्तन किया जाय इसके लिए आवश्यक है कि बालक के व्यवहार तथा किसी उत्तेजक के प्रति अनुक्रिया करने की प्रक्रिया को समझा जाय जो बालक के व्यवहार को रेखांकित करे

ज्ञान → कौशल → आदत व व्यवहार

DATE

Scanned by CamScanner

ज्ञान का अधिगम
(LEARNING OF KNOWLEDGE)

Notes

बालक में ज्ञान अर्जन करने के निम्न चरण में होते हैं।

ज्ञान :- (Knowledge) ज्ञान में हम विशिष्टताओं का ज्ञान, शब्दावली का ज्ञान, विशिष्ट तथ्यों का ज्ञान, परम्पराओं का ज्ञान, प्रचलन तथा तारतम्य का ज्ञान पद्धति, सार्वभौमिकता, तथ्यों ~~का~~ तथा सामान्यीकरण, सिद्धान्तों तथा संरचनाओं का ज्ञान बालक को देते हैं।

2. बोध :- (Understanding) बोध से हम अनुवाद अर्थापन एवं बहिर्वेशन आदि क्रियाओं को बालको द्वारा कराते हैं। जिसमें उसमे ज्ञान की समझ, बोध उत्पन्न होता है।

3- प्रयोग (Application) इस स्तर, बालक सीखने एवं समझने के ज्ञान का वास्तविक ~~परिस्थितियों~~ परिस्थितियों में प्रयोग करता है। इसमें हम तथ्यों या प्रत्ययों आदि का वास्तविक परिस्थितियों में सामान्यीकरण करवाते हैं।

4- विश्लेषण - (~~Analysis~~ Analysis) इस स्तर पर बालक पूर्व में सीखे गये समझे गये ज्ञान, तथ्यों अथवा प्रत्ययों का विश्लेषण करना सीखता है। इसे प्राय: शिक्षक द्वारा तथ्यो का विश्लेषण सम्बन्धो का विश्लेषण तथा व्यवस्थित सिद्धान्तो का विश्लेषण कराया जाता है।

5. संश्लेषण (Synthesis) इसमें तथ्यों को नई सी संरचना में संगठित किया जाता है। जिसमें परिणाम स्वरूप वातावरण मे उपस्थित किसी समस्या का समाधान, नवीन

Scanned by CamScanner

नवीन विन्यास या योजना का निर्माण करना बालक सीखता है।

Notes

मूल्यांकन (Evaluation) इस स्तर पर बालक सीखे समझे गये ज्ञान का विश्लेषण संश्लेषण कर कर उसका मूल्यांकन करता है। तथा उस विशेषज्ञान के सार को ग्रहण करता है। इस स्तर पर प्रायः आन्तरिक व बाह्य प्रमाणों के आधार पर निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है।

कौशल अधिगम
(SKILL LERNING)

कौशल शब्द का अर्थ क्षमता अर्थात् अच्छी तरह से कुछ करने के लिए ज्ञान अभ्यास और योग्यता से है। कौशल का तात्पर्य प्रदर्शन में सक्षम, उत्कृष्टता, विशेषज्ञता, निपुणता से है। यह क्षमता प्रशिक्षण द्वारा अधिग्रहीत एक कार्य में विशेष योग्यता है। साधारणतः कौशल का अर्थ है। निपुणता पूर्वक किसी कार्य को करने से कौशल का सम्बन्ध बालक के मनोगत्यात्मक पक्ष से होता है। जिसके अन्तर्गत वह शारीरिक क्रियाओं का निपुणतापूर्वक संचालन मानसिक नियंत्रण के साथ सीखना है।

विभिन्न कौशलों के विकास के प्रायः निम्न स्तर होते हैं।

1- प्रत्यक्षीकरण — प्रत्यक्षीकरण स्तर पर बालक रुचि, प्रेरणा या संवेदना के आधार पर बाह्य उत्तेजक का प्रत्यक्षीकरण करता है। निपुणतापूर्वक अनुक्रिया करने के लिए जागरूक होते है।

DATE

Scanned by CamScanner

निर्देशात्मक अनुक्रिया - इस अवसर पर कौशल के विकास हेतु शिक्षक अथवा प्रशिक्षक द्वारा अनुक्रियाओं का प्रदर्शन किया जाता है। जिसे वह अनुकरण द्वारा सीखता है। जैसे - नृत्य, तैरना, टाइपिंग,

3. सामान्य कौशल - इस तरह पर बालक में किसी कार्य को निपुणतापूर्वक करने का आत्म विश्वास तथा कौशल उत्पन्न हो जाता है।

2. जटिल कौशल - बालक आत्म विश्वास और निपुणतापूर्वक जटिल कौशलों का संपादन कर सकता है।

Scanned by CamScanner